स्वच्छता पर जीत का सफर – ग्राम पंचायत बडिया किमा जनपद पंचायत इन्दौर जिला इन्दौर

इन्दौर जनपद में स्थित इन्दौर से 20 कि.मी. दूर स्थित ग्राम पंचायत बडिया किमा ग्राम पंचायत जो तीन भागो में बटी है, गांव के सरपंच श्री खेमराजसिंह चौहान झुझारू एवं सफाई पसन्द इन्सान है, विगत वर्ष से गांव को निर्मल बनाने के प्रयास में लगे थे। गांव की जनसंख्या. 1253. जिसमे 221. परिवार निवास करते है, जिसमें से 76. परिवार गरीबी रेखा से नीचे तथा शेष 145.परिवार गरीबी रेखा से ऊपर निवासरत है। कुल परिवारों मे से केवल .83 परिवार के यहॉ शौचालय बने हुए थे। गांव का एक मजरा जो अनुसूचित जनजाति बाहुल्य है जहॉ पुराने वाले 525/– रू. वाले शौचालय बनाये गये थे जो बहुत कम उपयोग किये जाते थे। खुले में शौच पहाडी पर अनवरत जारी थी जिसे रोकना बडी चुनौती थी। साथ ही शौचालय को लेकर बडी निराशला महिलाओं में व्याप्त थी जिसे दूर करना टेडी खीर थी। सरपंच तथा उनकी टिम ने इस चुनौती को हाथ में लिया और शुरू हो गयी स्वच्छता की जंग।

गांव में सबसे पहले शौचालय का निर्माण शुरू किया गया, स्थानीय आर.एस.एम. को इस हेतु कार्य सौपा गया और टूटे शौचालय की मरम्मत होकर नवीन शौचालय का निर्माण का कार्य तीव्र गति से प्रारंभ हुआ, अचानक आये इस बदलाव को ग्राम वासी भी सहयोग किये बीना पीछे नही थे, गांव के मालीखेडी में कुछ ग्राम वासीयों ने अपनी पुंजी लगाकर बडे गडडे वाले शौचालय का निर्माण प्रारंभ किया। गांव में सडक किनारे पडे घुडे हटाने हेतु ग्राम पंचायत ने संबंधित किसानो को सूचना पत्र दिये गये निश्चित समय बाद भी जब घुडे नहीं हटे तब जे.सी.बी. की सहायता से घुडे हटवाना शुरू हुआ गाव के लोगो को समझ में आने लगा की अब स्वच्छता रखना जरूरी है उल्लेखनीय है कि गांव के किसानों को प्रेरित करने के लिये सरपंच श्री खेमराजसिंह चौहान ने सबसे पहले अपने घर नाडेप टांका बना कर घुडो का सही निष्पादन किया जो कि अन्य किसानों के लिये प्रेरणादायी राहा। गांव के सभी लोगो ने ठाना कि गंदगी तो इस गांव से मीट कर रहेगी , गांव के सरपंच तथा उनकी टीम आखीर सफाई करने में आमदा थी और शुरू हुआ सफर स्वच्छता में जनभागीदारी का गांव में स्वच्छता के बेनर जगह जगह लगाये गये और साफ सफाई रखने के नारे दिवारों पर लिखवाये गये। गांव की सडको पर बहता हुआ गंदा पानी नालीयो के माध्यम से गाव के बाहर जाने लगा जहा नाली नही थी वहा सोख्ता गडडे बनाकर गन्दे पानी का निष्पादन किया, लोग अपने घरो के सामने की सडक को झाडने लगे
और घर के चौबारो को भी साफ सुथरा रखने लगे।

ग्राम पंचायत बडिया किमा में दो प्राथमिक विद्यालय है एक बडियाकिमा किमा और एक गांव मालीखेडी में बडिया किमा पर एक ई.जी.एस शाला भी जहॉ पर अनुसूचित जनजाति के बच्चों को पढाया जाता है शाला में स्वच्छता का पाठ पढाया जाने लगा बच्चों में निजी स्वच्छता के प्रति रूझान विकसीत होने लगा, शाला शौचालय का निर्माण कर उसका उपयोग सुनिश्चित हुआ, मरम्मत रखरखाव के साथ शाला शौचालय साफ सुथरा दिखने लगा प्रधानाध्यापक द्वारा शौचालय का उपयोग सुनिश्चित होने लगा। घर में शौचालय का उपयोग हो इस हेतु शाला में बच्चों को शौचालय की उपयोगिता तथा आवश्यकता के बारे में जानकारी प्रदान की गई। आंगनवाडी में भी बच्चों को स्वच्छता का पाठ नियमीत रूप से पडाया जाने लगा। गांव में स्वच्छता के प्रति मुहिम में बच्चों की सहभागीता बडने लगी।

एक चुनौती ग्राम स्वच्छता की – ग्राम पंचायत बरलई जागीर जनपद पंचायत सांवेर जिला इन्दौर

ग्राम पंचायत बरलई जागीर म.प्र. के इन्दौर जिले की सांवेर जनपद की ग्राम पंचायत है इस ग्राम पंचायत में केवल एक ही गांव है, जिसकी जनसंख्या लगभग 5000 है इस ग्राम में वर्तमान में लगभग 712 परिवार निवास करते है, जिसमें 299 परिवार गरीबी रेखा के नीचे जीवन यापन करते है तथा शेष 413 ए.पी.एल परिवार के है। उक्त 299 परिवारों में से लगभग 40 परिवारों के घरो पर शौचालय निर्मित थे। एवं 413 परिवारों में से 90 परिवारो के घरो पर शौचालय तो निर्मित थे लेकिन वे उसका उपयोग यदा कदा ही करते थे अर्थात कुल 712 परिवारों मे से केवल 130 परिवारों में शौचालय निर्मित थे इस प्रकार ग्राम पंचायत को बहुत बडा लक्ष्य शौचालय निर्माण का मिला एवं उससे भी जटिल समस्या यह थी कि शौचालय निर्माण के पश्चात उसके उपयोगी की । ग्राम के प्राथमिक एंव माध्यमिक विधालय में भी इसी दौरान नये शौचालय का निर्माण करवाया गया ग्राम में कुल दो आंगनवाडियॉ है एक आंगनवाडी निजी मकान में लग रही है जहॉ पर शौचालय तो निर्मित था लेकिन साफ सफाई समय पर नहीं होती थी तथा एक आंगनवाडी शासकीय भवन में लगती है जहा पर शौचालय का निर्माण ग्राम पंचायत के द्वारा करवाया गया है। घर के कूडे कचरे एवं जानवरों के गोबर को लोग गॉव के अंदर ही सडक के दोनो किनारो पर अव्यवस्थित डालते थे, ग्राम के गंदे पानी की निकासी की व्यवस्था नही थी। जिससे मुख्य सडको एवं मार्गो पर कीचड एवं गंदगी बनी रहती थी ग्राम के विधालय परिसर में लगभग 150 घूडे एंव अहिल्या कुंड के आसपास लगभग 90 घुडे बनाकर उसमें घास कचरा एवं गोबर डाला जात था साथ ही बच्चों का शौचकर्म भी इन्हीं के आसपास होता था। जिससे बिना नाक दबाये वहॉ से गुजरना एक चुनौती भरा कार्य था विधालय में बच्चों को खेलने की जगह भी उपलब्ध नही थी गांव में हर जगह पर घर के गंदे पानी के निकलने से कीचड एवं गंदगी होने से वातावरण प्रदूषित था। पॉच माह पूर्व ग्राम पंचायत के सरपंच श्री सुरेश पटेल व सचिव श्री राजेन्द्र सिंह ठाकुर एवं उपसरपंच श्री प्रदीप उपाध्याय को ग्राम को स्वच्छ बनाने हेतु क्षेत्र के सहा.वि.वि.अधि. श्री रमाकांत शर्मा द्वारा प्रेरित किया गया इसके उपरांत निर्मल ग्राम से संबंधित विभिन्न स्तर पर आयोजित सम्मेलनों में सरपंच एवं सचिव ने भाग लिया एवं ग्राम से निर्मल ग्राम पंचायत बनाने का संकल्प लिया।

ग्राम पंचायत बरलई जागीर में ग्राम सभा का आयोजन किया गया जिसमें ग्रामवासियों को निर्मल ग्राम बनाने हेतु सरकार के कार्यक्रम के बारे में जानकारी दी गई और प्रस्ताव पारित किया गया कि ग्राम के हर परिवार में स्वच्छ शौचालय बनवाये जावे एवं सभी ग्रामवासी शौचालय का उपयोग करें कार्यक्रम को सफल बनाने के लिये पंचायत स्तर पर विभिन्न प्रकार की प्रचार प्रसार गतिविधियॉ आयोजित की जावे। ग्राम सभा की मंशानुसार उपरोक्त कार्यक्रम समय समय पर आयोजित किये गये।

सर्वप्रथम ग्राम के प्रत्येक परिवार के घर में शौचालय का निर्माण हो यह मुहिम चलाई गई इस मुहिम में मुख्य कार्यपालन अधिकारी श्री आशुतोष अवस्थी, लो.स्वा.यां.वि. इन्दौर के सहायक यंत्री श्री संतोष श्रीवास्तव एवं मु.का.अ.जनपद श्रीमति निशीबालासिंह एवं लो.स्वा.यां. के उपयंत्री श्री पी.सी.शर्मा ने सहयोग दिया। सरपंच एवं सचिव ग्राम पंचयात बरलई जागीर ने कई रातों तक ग्राम में रात्रि विश्राम कर प्रत्येक घर में शौचालय क्यो हो एवं उसके फायदों से ग्रामीणों को अवगत करवाया एवं शौचालय निर्माण हेतु एवं उसके उपयोग हेतु प्रेरित किया, इसके लिये उक्त दल ने ग्राम के मुख्य स्थानों पर जिल पंचायत द्वारा की गई फिल्मों का प्रदर्शन किया गया।

राज्य स्तरीय समन्वयक (समग्र स्वच्छता अभियान) ने ग्राम में भ्रमण के दौरान विधालय के छात्र छात्राओं एवं शिक्षकों को स्वच्छता की शिक्षा ग्राम वासियों को देने तथा विधालय एवं आंागनवाडी के वातावरण को स्वच्छ बनाये जाने हेतु विशेष तौर पर प्रेरित किया।

मु.का.अधि. जिला पंचायत इन्दौर ,अनुविभागीय अधि. राजस्व, मु.का.अधि. जनपद पंचायत सांवेर अंतराष्ट्रिय फायनेंसर श्रीमति पदमाजी नायर, दिल्ली से यूनिसेफ, यूके (डी.एफ.आई.डी.) इंग्लैंड की वित्तिय संगठन एवं जिला समन्वयक अधिकारियों द्वारा ग्राम का भ्रमण किया एवं स्वच्छता हेतु किये गये कार्यो का अवलोकन कर ग्रामीणो को स्वच्छ रहने हेतु प्रेरित किया।

समग्र स्वच्छता अभियान के पोस्टरों द्वारा रिक्शो पर माइक बांधकर, ग्राम पंचायत के द्वारा अपील हेतु पोस्टर छपवाकर वितरित कर स्वच्छता की जानकारी दी गई एवं चौकीदार से डोंडी पिटवाकर स्वच्छता की जानकारी दी गई इसी तारतम्य में जगह जगह पर कूडा डालने हेतु कुडादान की व्यवस्था ग्राम पंचायत के द्वारा की गई।

गांव मे पडे घुडे हटाना बडा चिन्ता का विषय बन गया था। जिस मैदान में घुडे पडे थे वहा से उसे हटाना एक चुनौती था गांव वाले किसी भी दशा में घुडे उस मैदान से हटाने को तैयार नही हो रहे थे। सरपंच एवं साथियों की सुझबुझ काम आयी ओर उन्होने उस स्थान पर भागवत कथा रखवा दी जब किसानो को बता चला तो भगवत कथा के प्रति उनकी श्रद्वा होने से तत्काल सारे घुडे हट गये मैदान साफ हो गया।

ग्राम पंचायत के द्वारा गश्तीदलों का गठन किया गया इस गश्तीदल की विशेषता यह थी कि इस दल में गॉव के प्रबुद्वजन, चौकीदार, समाजसेवी, विधार्थी, राजनीतिक दलों के सदस्यों के साथ ग्राम के सरपंच, सचिव एवं मजदूर तक भी शामील थे इन लोगों के द्वारा सुबह चार बजे से

गश्त लगाना प्रारंभ कर सुबह सात बजे तक लगातार निगरानी की जाती एवं जो लोग लोटा लेकर बाहर जाते दिखे उसे बडे प्यार से समझाते, जब लगातार दो चार बार के बाद भी वह व्यक्ति नहीं मानता तो उसे ताने मार कर समझाया जाता कई बार तो उसका लोटा ढोलना पडता यह क्रम लगभग एक माह तक रहा तब लोगो को यह बात समझ में आ गई की अब यह लोटा ले जाना बंद करना होगा। इस प्रकार खुले में शौच पूर्णतः बंद हो गया। ग्राम पंचायत बरलई जागीर में स्वच्छता संबंधी कार्य 30 नवम्बर 2006 तक पूर्ण कर लिया गया।

ग्राम पंचायत के द्वारा गठित समूह के सदस्यों के द्वारा घर घर जाकर यह जानकारी दी गई कि प्रत्येक परिवार का सदस्य भोजन करने से पहले एवं शौच जाने के बाद अपने हाथ साबुन से अच्छी प्रकार से धोये, पीने के पानी को छानकर एवं ढंककर रखे, पीने का पानी निकालने हेतु डंडी वाले लोटे का प्रयोग करे, इस प्रकार समूह की सीख घर घर पहुचने से पूरे ग्राम के लोगों को इन चीजों की आदत हो गई है एवं सभी ग्रामीण अपनाने लगे।

माननीय जिलाधीश महोदय एवं मु.का.अधि. जिला पंचायत इन्दौर एवं मु.का.अधि. जनपद पंचायत सांवेर एवं अन्य शासकीय अधिकारियों के मार्गदर्शन से ग्राम वासियों एवं सरपंच, सचिव, ए.डी.ओ. के अथक प्रयासों से ग्राम पंचायत निर्मल ग्राम की श्रेणी में आ गया है।

उन्नत शहर का स्वच्छ गांव – ग्राम पंचायत बिचौली मर्दाना जनपद पंचायत इन्दौर जिला इन्दौर

इन्दौर शहर की सीमा से लगा गांव बिचौली मर्दाना इन्दौर जनपद के पूर्वी क्षेत्र में स्थित है। यह गांव पूर्व से ही राजनैतिक गढ रहा है यहॉ के पटेल परिवार में से श्री रामेश्वर पटेल पूर्व में मंत्री और उनके सुपुत्र श्री सत्यनारायण पटेल पूर्व में क्षेत्र कमांक 5 के ओर वर्तमान में देपालपुर क्षेत्र के विधायक है जो कि यह गांव भी इसी क्षेत्र के अन्दर आता है उसके विधायक रह चुके है। साथ इनके परिवार के श्री जगदीश पटेल देपालपुर के विधायक रह चुके है, इस गांव की कुल आबादी 3796 है। कुल परिवार 602 हैं जिसमें से ए.पी.एल. के 521 तथा बी.पी.एल. के 81 के परिवार निवासरत है। इस गांव की

सरपंच श्रीमति कुसूमबाई है जो तथा सचिव श्री राजेश श्रीवास्तव गांव की गन्दगी तथा लोगो को खुले में शौच जाने की आदतों को खत्म करना चाहते थें क्योकि यह गांव एक तरह से शहर होने जा रहा था इस गांव में अध्यनरत बच्चों जिसमें से बालिकाए भी गांव की दशा से मन ही मन बहुत दुखी थी । गांव शहर से जुडे होने के कारण लोगो में आधुनिक सभ्यता रहन सहन साफ दिखाई पडता था गांव समृद्व होकर भी गंन्दगी का शिकार था।

गांव के सरपंच तथा पटेल परिवार के सकिय योगदान तथा सचिव की समझदारी से गांव में ग्राम सभा में निर्मल ग्राम बनाने का प्रस्ताव पारित किया गया जिसमें सभी ने अपना योगदान देने की इच्छा जाहिर की। गांव में शौचालय निर्माण का कार्य प्रारंभ हुआ कुछ लोग जो हटी किस्म के थे वह अपने घर शौचालय की बात पर तैयार नहीं हुए पर सरपंच तथा सचिव की सुझबुझ से उन लोगों

को भी जनसम्पर्क तथा फिल्म प्रदर्शन कर उनको समझाया गया क्योकि गांव शहर से जुडे होने से उनको समझाना ज्यादा मुश्किल नहीं हुआ और उनकी समझ में आ गया की शौचालय की क्या उपयोगिता है, इस गांव में लोग समृद्व होने से बडे गडडे वाले शौचालय बनाने की होड सी लग गयी क्योकि शौचालय उनकी निजी संपति जो थी। समृद्व लोगो के साथ साथ जो लोग गरीबी परिवार के थे वे भी बडे गडडे वाला शौचालय बनाने लगे। धीरे धीरे गांव में शौचालय का कार्य पूर्ण होने लगा तथा उपयोग भी प्रारंभ हुआ गांव में 100 प्रतिशत शौचालय का निर्माण होकर उपयोग प्रारंभ हुआ। इस गांव में लगभग सभी गलियों में आर.सी.सी. है और गंदे पानी की निकासी के लिये गटर भी बनाई गयी है, जहॉ की गलिया कच्ची है वहा पर गंदे पानी के लिये घरों के सामने सोख्ता गडडे भी बनाये गये है। गांव में सामुदायिक जगह पर कुडे कचरे के लिये कुडे दान का निर्माण भी करवाया गया है जिससे घरों का कुडा कचरा कुडे दान में डालने लगे है। गांव वाले इस बदलाव से बेहद खुश है, जब शासकीय अमला इस गांव के भ्रमण के लिये जाते है तो गांव वाले उनको कहते है कि साब अब हमारा गांव निर्मल गांव की श्रेर्णी में आ गया है अब सारे लोग स्वच्छता रखने लगे है,।

इस गांव में तीन विद्यालय है एक प्रा.वि. दूसरा उ.मा.वि. तथा हाई स्कूल भी है यहा के सभी विधालयों में शौचालय है एवं उनका उपयोग भी हो रहा है, इस गांव के शिक्षकों का भी विशेष भूमिका रही , उन्होने नियमीत रूप से स्वच्छता की आदतों का पाठ तथा शौचालय के उपयोग की आवश्यकता के बारे में बच्चों को बताया बच्चों ने स्वच्छता की आदतों को अपने घर तक ले गये। और शुरू हुई घर घर में स्वच्छता की शुरूआत इसी गांव में एक सुन्दर सा तालाब भी है जो बायपास रोड के किनारे होने से एक पर्यटक स्थल के रूप बदल गया है। यहा के घर भी कालोनी टाईप बने होने से यह गांव गांव नही बल्की शहर जैसा दिखाई देता है। यह गांव अब पूर्ण रूप से निर्मल ग्राम की श्रेर्णी में आने लगा है।

प्रस्तावित निर्मल ग्राम खलखला जनपद पंचायत सांवेर जिला इन्दौर की कहानी

गंभीर नदी किनारे बसा हुआ ग्राम खलखला है जो कि इन्दौर जिले कि जनपद पंचायत सांवेर के अन्तर्गत आता है। यह ग्राम जनपद पंचायत सांवेर मुख्यालय से लगभग 18 किलो मीटर दुर है। जिसमें कुल 247 परिवार निवास करते है। जिसमें से 83 परिवार गरीबी रेखा के निचे जीवन यापन करते है। शेष 164 परिवार गरीबी रेखा के उपर जीवन यापन करते है। उक्त 247 में से मात्र 50 परिवारों के घरो में ही शौचालय निर्मित थे। शेष 197 परिवार शौच के लिए बाहर जंगल में जाते थें। उक्त ग्राम में विद्यालय एवं आंगनवाडी में शौचालय निर्माण हो चुके थे। जिनकी कि साफ सफाई एवं उचित रख रखाव नही होता था। ग्राम निवासी घर के कुडे कचरे एंव जानवरों की गोबर को घरों के पास एवं सडक किनारे अव्यवस्थित डालते थे। साथ हि ग्राम में गंदे पानी कि निकासी कि उचित व्यवस्था नही होने के कारण किचड एवं गंदगी होती थी। ग्राम का वातावरण गन्दे पानी एवं कुडे कचरे के कारण गन्दा था।

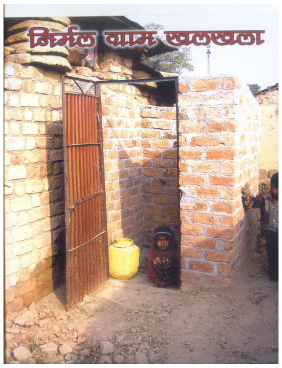

निर्मल ग्राम बछोडा (देपालपुर तेह. के ग्राम बछोडा जो पूर्व में निर्मल ग्राम घोषित हो चुका था। एवं पुरस्कृत हो चुका था) सरपंच सचिव वरिष्ठ नागरिकों को ग्राम को स्वच्छ निर्मल ग्राम बनाने हेतु क्षैत्र के सहा.वि.वि.अधि. द्वारा प्रेषित किया गया। तत् पश्चात निर्मल ग्राम से संबंधित विभिन्न स्तर पर आयोजित सम्मेलनों से सरपंच एवं सचिव ने ठान लिया ओर निर्मल ग्राम पंचायत बनाने का संकल्प लिया। तत् पश्चात ग्राम खलखला ग्राम सभा का आयोजन किया गया। जिसमें ग्राम वासियों को निर्मल ग्राम बनाने हेतु शासन के कार्यक्रम के संबंध में जानकारी दी गई। तत् पश्चात प्रस्ताव पारित किया गया कि ग्राम के सभी घरों में स्वच्छ शौचालय बनवाये जाकर सभी ग्रामवासी शौचालय का उपयोग करेगे।

1. सर्व प्रथम ग्राम में सभी घरों में शौचालय निर्माण हो यह अभियान चलाया गया। इसमें मुख्य कार्यपालन अधिकारी जनपद पंचायत सांवेर सहायक वि.वि.अधि. उपयंत्री लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी विभाग सरपंच, सचिव ग्राम के वरिष्ठ नागरिक आदि ने प्रत्येक परिवारों से मिल कर शौचालय के उपयोग शौचालय से सुविधा, शौचालय की उपयोगिता के संबंध में शौचालय निर्माण हेतु प्रेरित किया गया। ग्राम पंचायत क्षैत्र के सभी नागरीको को यह समझ में आया कि शौचालय निर्माण किया जाना कितना आवश्यक है। इसके लिए उक्त दल ने ग्राम के चौपाल पर जिला पंचायत द्वारा निर्मित फिल्म आखिर कब तक एवं अन्य फिल्मों का प्रदर्शन किया गया। गांव में शौचालय को लेकर नागरिको में उत्साह देखा गया। बच्चों को भी शालेय स्वच्छता प्रतियोगिता में भाग लेकर स्वच्छता के चित्र बनाये, धीरे धीरे गांव की तस्वीर बदलने लगी गांव में नाली खरजे का निर्माण हुआ ग्रामीणों ने स्वच्छता संबंधी आदतों को अपनाना शुरू किया कुडेदान का उपयोग प्रारंभ हुआ, स्कूल आगनवाडी एवं पंचायत और ग्रामीण सभी निर्मल ग्राम बनाने में एक जुट हो गये।

2. अनुविभागीय अधिकारी राजस्व एवं मुख्य कार्यपालन अधिकारी जनपद पंचायत सांवेर द्वारा समय समय पर ग्राम का भ्रमण किया जाकर स्वच्छता हेतु किये गये सभी कार्यो का अवलोकन कर ग्रामवासियों को स्वच्छ रहने हेतु प्रेरित किया गया। स्वच्छता के प्रति सोच मे बदलाव आया लोग जुडते गये सभी ने पाया अपना गांव स्वच्छ और साफ निर्मल हो गया।